Content

: 14 :

:: अनुक्रमिका ::

प्राक्कथन : 1-13

प्रथम अध्याय : विषय-प्रवेश :001-057 :

प्रास्ताविक — आधुनिक काल में हिन्दी उपन्यास के विकास के कारण : गद्य का विकास, अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार-प्रसार, पुनर्जागरण की प्रवृत्तियाँ — औद्योगिकरण की प्रवृत्ति — औद्योगिकरण की विशेषताएं— औद्योगिकरण का विकास तथा उसके प्रभाव — नगरीकरण की प्रक्रिया और उसके परिणाम — हिन्दी उपन्यास का विकास — प्रेमचन्दोत्तर औपन्यासिक प्रवृत्तियाँ — प्रेमचन्दोत्तर औपन्यासिक प्रवृत्तियाँ — सामाजिक उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास, मनोवैज्ञानिक उपन्यास, समाजवादी उपन्यास, आंचलिक उपन्यास, पौराणिक उपन्यास, राजनैतिक उपन्यास, व्यंग्यात्मक उपन्यास — आलोच्य लेखकों की नारी-विषयक विभावना — निष्कर्ष — सन्दर्भानुक्रम।

द्वितीय अध्याय : प्रेमचन्द तथा जैनेन्द्र के उपन्यासों का कथ्य :058-140

प्रास्ताविक — प्रेमचन्द के उपन्यासों का कथ्य : सेवासदन, वरदान, प्रतिज्ञा, निर्मला, गबन, प्रेमाश्रम, कायाकल्प, कर्मभूमि, रंगभूमि, गोदान, मंगलसूत्र (अपूर्ण) — जैनेन्द्र के उपन्यासों का कथ्य : परख, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, सुखदा, विवर्त, व्यतीत, जयवर्द्धन, मुक्तिबोध, अनंतर, अनामस्वामी, दशार्क — निष्कर्ष — संदर्भानुक्रम।

तृतीय अध्याय : प्रेमचन्द के उपन्यासों में निरूपित नारी-पात्र : 141-226

प्रास्ताविक — वरदान, सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, गबन, निर्मला, कर्मभूमि, प्रतिज्ञा, गोदान, मंगलसूत्र आदि उपन्यासों के नारी पात्र — [पात्रों के लिए देखिए : प्राक्कथन-पृ.7 प्रथम परिच्छेद] — निष्कर्ष — संदर्भानुक्रम ।

चतुर्थ अध्याय : जैनेन्द्र के उपन्यासों में निरूपित नारी-पात्र : 227-335

प्रास्ताविक — परख, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, सुखदा, विवर्त, व्यतीत, जयवर्धन, मुक्तिबोध, अनंतर, अनामस्वामी, दशार्क आदि उपन्यासों के नारी-पात्र — [पात्रों के लिए देखिए : प्राक्कथन पृ.7 द्वितीय परिच्छेद] — निष्कर्ष — संदर्भानुक्रम ।

पंचम अध्याय : प्रेमचन्द तथा जैनेन्द्र के औपन्यासिक नारी-पात्रों का तुलनात्मक विश्लेषण : पात्रों के वर्गीकरण की दृष्टि से : 336-385

प्रास्ताविक — प्रेमचन्द के तुलनीय औपन्यासिक नारी पात्र — जैनेन्द्र के तुलनीय औपन्यासिक नारी पात्र — तुलनात्मक अध्ययन से अभिप्राय — उपन्यासों में पात्रों के वर्गीकरण के विभिन्न आयाम — सैद्धान्तिक दृष्टि से पात्रों का वर्गीकरण : वर्गीकृत चरित्र, वैयक्तिक चरित्र, स्थिर चरित्र, गतिशील चरित्र — ई.एम. फार्स्टर का वर्गीकरण : द्विपरिमाणी पात्र, त्रिपरिमाणी पात्र :: पात्रों की प्रधानता के आधार पर वर्गीकरण : प्रमुख पात्र, पार्श्विक पात्र, आकस्मिक पात्र — मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर पात्रों का वर्गीकरण : अंतर्मुखी, बहिर्मुखी, हृदयवादी, मस्तिष्कवादी, ग्रन्थि-युक्त चरित्र — विविध चरित्रांकन पद्धति — तुलनात्मक अध्ययन — उपर्युक्त सभी आधारों पर उभय के औपन्यासिक नारी पात्रों का तुलनात्मक विश्लेषण — निष्कर्ष — संदर्भानुक्रम ।

षष्ठ अध्याय : प्रेमचन्द तथा जैनेन्द्र के औपन्यासिक नारी पात्रों का तुलनात्मक विश्लेषण : विभिन्न आधारों पर [1] : 386–430 :

प्रास्ताविक — परिवेश की दृष्टि से — विलक्षणता की दृष्टि से — नायिकाओं के पतियों की दृष्टि से — शिक्षा की दृष्टि से — व्यवसायिकता की दृष्टि से — आर्थिक समस्या की दृष्टि से — निष्कर्ष — संदर्भानुक्रम ।

सप्तम अध्याय : प्रेमचन्द तथा जैनेन्द्र के औपन्यासिक नारी पात्रों का तुलनात्मक विश्लेषण : विभिन्न आधारों पर [2] : 431–486

प्रास्ताविक — अवस्था [वय] की दृष्टि से उभय के नारी पात्रों की तुलना — उभय में विधवा नारी पात्र — उभय में प्रेमिकाओं का चित्रण — उभय में रक्षिताओं का चित्रण — मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उभय के नारी पात्र — विद्रोहात्मकता की दृष्टि से दोनों के नारी पात्र — आदर्शवाद और यथार्थवाद की दृष्टि से दोनों के नारी पात्र — आत्मपीड़क और संघर्षशील चरित्र — वेश्या समस्या की दृष्टि से — उभय के औपन्यासिक साहित्य में पतिव्रता-विषयक अवधारणा — कथानक रूढ़ियों की दृष्टि से उभय की नारी दृष्टि पर विचार — उभय की नारी-दृष्टि में विदेशी महिलाओं का चित्रण — अंतर्राष्ट्रीय विवाह-संबंध — देश-विदेश में घूमी नारियों का चित्रण — विधर्मी महिलाएँ — अंतर्जातीय विवाह का चित्रण — स्वकीया-परकीया नायिकाएँ — उभय की कथा-दृष्टि में तुल्य प्रकार की स्त्रियों का चित्रण — उभय के औपन्यासिक नारी पात्रों में अविस्मरणीय नारी पात्र — निष्कर्ष — संदर्भानुक्रम ।

अष्टम अध्याय : उपसंहार : 487–504

समग्रावलोकन पर आधारित निष्कर्ष — विषय का महत्व व उपलब्धियाँ — भविष्यत् संभावनाएँ ।

संदर्भिका (Bibliography) : 505-511

(1) परिशिष्ट – क : उपजीव्य उपन्यासों की सूची ।
(2) परिशिष्ट – ख : सहायक-ग्रन्थों की सूची (हिन्दी) ।
(3) परिशिष्ट – ग : सहायक-ग्रन्थों की सूची (अंग्रेजी) ।
(4) परिशिष्ट – घ : पत्र-पत्रिकाएँ ।